Dwarahat The Block of District Almora in Uttarakhand: A Sociological Study

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जनपद का द्वाराहाट विकासखंड रूएक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ पुष्पा वर्मा
सहायक प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
एस एस जे परिसर
अल्मोड़ा उत्तराखंड

डॉ जितेंद्र प्रकाश त्यागी
सहायक प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
पी एन जी राज० पी०जी० कॉलेज रामनगर
नैनीताल उत्तराखंड

।इेजतंबज

अनुसूचित जाति के स्नातक स्तर तथा अन्य छात्रों की शैक्षणिक समस्याओं का समाधान करने की दिशा में सरकार द्वारा सर्वेक्षण कराये जा रहे हैं किन्तु अल्मोड़ा जनपद जैसे पहाड़ी क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित के स्नातक स्तर के छात्रों की सामाजिक.आर्थिक समस्याओं पर कोई अध्ययन नहीं हुआ है। अतः अध्ययन की इस कमी को पूर्ण करने के उद्देश्य से ही शोधकर्ता ने इस विषय का चुनाव किया है। प्रस्तावित अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अल्मोड़ा जनपद में निवास करने वाले अनुसूचित जातियों के स्नातक छात्रों को प्राप्त सुविधा का अध्ययन है । क्या अनुसूचित जाति के लोग स्नातक कक्षाओं में प्रवेश सम्बन्धी सरकार की आरक्षण नीति का अच्छी तरह लाभ उठा पा रहे है ६ स्नातक स्तर पर प्रवेश में आरक्षण की सुविधा मिलने के उपरान्त इनके सामाजिक और आर्थिक प्रस्थिति पर किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है६ वर्तमान परिवर्तित सामाजिक परिवेश में सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप अनुसूचित जातियों में किस प्रकार का सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं आदि।

ज्ञमलूवतके रू सामाजिक.आर्थिक समस्याए अनुसूचित जातिए अल्मोड़ा जनपदए स्नातक छात्र।

भारतीय समाज की संरचना वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित है जिसमें जातियों का विभाजन प्रारंभ में कार्य के आधार पर हुआ। भारतीय समाज में जातियों का विभाजन इस प्रकार किया गया ब्राह्मणए क्षत्रियए वैश्य और शूद्र ब्राह्मण जाति का कार्य पूजा.पाठीए अध्ययन अध्यापनए क्षत्रिय का कार्य शासन और देश रक्षा तथा वैश्य का कार्य व्यापार करना निर्धारित किया गया। शूद्रों का कार्य उक्त तीनों वर्णों की सेवा करना निर्धारित किया गया। समाज में इस प्रकार की विकृति उत्पन्न हुई कि शूद्र को अछूत माना जाने लगाए उन्हें सार्वजनिक कुंओं पर पानी पीने से मना किया जाने लगाए मन्दिरों में उनका प्रवेश वर्जित हो गया तथा मनुष्य होते हुए भी उन्हें एक पशु से भी बदतर जीवन व्यतीत करने को विवश किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश का संविधान बना जिसमें अनुसूचित जातियों को भी समानता का दर्जा प्रदान किया गया तथा उन्हें सरकारी सेवाओं में आरक्षण का लाभ दिया गया। भारतीय संविधान में समानता के आधार को मूल अधिकार माना गया है। ऐसा होने से इनकी समाजिक और आर्थिक स्थिति में तेजी से

परिवर्तन हुआ है। इधर कुछ दशकों से इनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है और ये समाज की मुख्य धारा से जुड़ गये हैं। इसके अतिरिक्त इनके प्रतिनिधि विधानसभा व संसद में प्रवेश कर रहे हैं तथा राजनीति में भी इनके लिए आरक्षण प्रदान किया गया है। विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश में अनुसूचित जातियों के अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया जा रहा है तथा उन्हें छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहायता भी प्रदान की जा रही है ताकि ये अध्ययन कर अपना जीवन स्तर उन्नत कर सकें।

उत्तराखण्ड राज्य के मध्य हिमालय की गोद में स्थित कुमायूँ भौगोलिकए ऐतिहासिक व राजनीतिक दृष्टि से भारत के भू.भाग का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार उत्तराखण्ड केदारखण्ड व मानस खण्ड में विभक्त है। केदारखण्ड में वर्तमान गढ़वाल सम्मिलित है।

हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित जनपद अल्मोड़ा के उत्तर में बागेश्वरए पूरब में पिथौरागढ़ए दक्षिण में सरोवर की नगरी नैनीताल तथा पश्चिम में चमोली जनपद की सीमाएं हैं। अल्मोड़ा का भौगोलिक भू.भाग समुद्र तल से 750 मीटर से लेकर 2000 मीटर से ऊपर है। सरयूए कोसीए गगास तथा सुआल यहां की प्रमुख नदियां हैं। यह जनपद सांस्कृतिक व धार्मिक दृष्टि से भी अतीत से लेकर वर्तमान समय तक अनेक रूपों में विख्यात है तथा अनादिकाल से महापुरुषोंए सिद्धों और साधकों की कर्मस्थली एवं प्रेरणा का श्रोत भी रहा है। वैदिक काल से यह सघन अरण्य प्रान्तोंए गिरिकन्दराओं के रूप में मुनियों व ऋषियों की तपश्चर्या का केन्द्र भी रहा है। कोसी और सुआल के नदी के मध्य स्थित काषायः पर्वत के पश्चिमी भाग में स्थित विष्णु क्षेत्र को अल्मोड़ा के नाम से जाना जाता हैए यह वृत्त मानस खण्ड में वर्णित है।देवभूमि हिमालय की संस्कृति में अल्मोड़ा का विशिष्ट योगदान रहा है। यह क्षेत्र एक धार्मिकए सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में विद्वत् समान का आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस क्षेत्र की कठिन भौगोलिक संरचना के बावजूद मानव ने भी इसे अपना आवास क्षेत्र बनाया था। इस क्षेत्र की पर्वतमालाएं विविध प्रागैतिहासिकए सांस्कृतिक अवशेषों के प्रमाणों से भरी पड़ी हैं।

अल्मोड़ा में चन्द राजाओं ने अपनी राजधानी स्थापित की थी परिणाम स्वरुप यहाँ समाज के विविध वर्गों के लोग यहाँ बसते गये धार्मिक प्रवृति होने से चन्द राजाओं ने कई धार्मिक उपासना केन्द्र यहाँ स्थापित किये थे। राजा रुद्र चन्द ने श्त्रैवेणिक धर्म निर्णयश्ए श्उषारुद्र गोदयाश् नामक ग्रंथ लिखे । राजा रुपचन्द्र ने पक्षी आखेट कला पर श्शयनिक शास्त्रश् नामक ग्रंथ की रचना की थी। विद्वानों का आश्रय स्थल यह क्षेत्र रहा ज्योतिष विद्वत् परम्परा का यहाँ काफी विकास हुआ प्रमाणिक ग्रंथों में श्रृंगार मंजरी टीका इस मंजरी टीका है इस समय अल्मोड़ा में संस्कृत शिक्षा के प्रसार के लिए व्यापक प्रयास हुए। कल्याण चन्द्रोयक नामक ग्रंथ से भी संस्कृत के प्रयोग की जानकारी प्राप्त होती है

अल्मोड़ा जनपद की कुल जनसंख्या 6ए30ए446 है इसका मैगौलिक क्षेत्रफल 3ए68ए946 वर्ग किमी है। कुल नौ तहसीलें हैं तथा11 विकास खण्ड हैं विकास खण्डों के नामहैं . हवालबागए ताकुलाए लमगड़ाए सल्ट द्वाराहाटए ताड़ीखेतए चौखुटियाए साल्देए भिकियासैणए धोलछीना तथा धौलादेवी।

इन विकास खण्डों में से द्वाराहाट विकास खण्ड को अध्ययन के लिए चयनित किया गया है। द्वाराहाट विधान सभा क्षेत्र भी है। जनपद के कुल ग्रामों की संख्या 2235 है जो दूर.दूर फैले हुए है तथा जहाँ प्राकृतिक कारणों से आवागमन के साधनों की कमी बनी हुई है। नगर एवं नगरसमुहों की संख्या 4 है। कुल 1122 ग्राम सभाऐं है। ग्रामीण जनसंख्या 5ए76497 है। जिसमें से अनुसूचित जाति की जनसंख्या 1ए29ए370 है। जनपद में कुल 929 प्रकार की अनुसूचित जातिया तथा जनजातियों निवास करती हैं। जिनके अपने अपने रीतिरिवाज है इस जनपद की नगरीय जनसंख्या बहुत कम है अर्थात 53ए949 व्यक्ति नगरों में निवास करतें हैं जो कुल ग्रामीण जनसंख्या के 10 प्रतिशत से कुछ कम हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि संम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 25 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जातियों की है। शेष 75 प्रतिशत में अनुसूचित जनजातियों तथा सवर्णों की जनसंख्या है। द्वाराहाट नोटीफाइट एरिया है। पर्वतीय क्षेत्र होने के बावजूद जनपद में साक्षरता का प्रतिशत काफी उत्साहजनक है। जनपद की साक्षरता 74ण्ण्73 प्रतिशत है। पुरुषों और महिलाओं की साक्षरता दर कमशरू 90ण्15और 61ण्43 प्रतिशत है ।

द्वाराहाट एक अत्यन्त गौरवशाली नगर है। एक समय इस स्थान का बहुत महत्व था। कत्यूरी राजाओं की यह वैभवशाली नगरी थी। कहते हैं कत्यूरियों ने इसी स्थान से पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में अपना राज्य संचालित किया

था। उस समय कत्यूरियों का राज्य रुहेलखण्ड तक फैला हुआ था द्वाराहाट समुद्रतल से 5039 फुट उचाई पर स्थित है।

द्वाराहाट विकास खण्ड की स्थापना 1 अप्रैल 1958 को हुई थी 2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 61ण्556 है जिसमें पुरुषों की संख्या 27ण्391 तथा महिलाओं की संख्या 34ए165 है। इस विकास खण्ड में अनुसूचित जाति के लोगों की संख्या 16077 है जिसमें पुरुष 7508 तथा महिला 8569 है। द्वाराहाट विकास खण्ड में साक्षरों की कुल संख्या 39ए546 है जिसमें 20ए703 पुरुष और 18ण्883 महिलाए हैं। द्वाराहाट विकास खण्ड अल्मोड़ा जनपद से 70 किमी की दूरी पर स्थित है। 1 अप्रैल 2004 को द्वाराहाट तहसील की स्थापना हुई है। इस विकास खण्ड में 115 ग्राम पंचायतें तथा 11 न्याय पंचायतें हैं।1 अक्टूबर 1974 को द्वाराहाट को नोटिफाइट एरिया के रूप में घोषित कर दिय गया।

द्वाराहाट का भौगोलिक स्वरुप प्रकृति ने उन्मुक्त हस्त से सजोया है इस नैसर्गिक सौन्दर्य का अंग व आधार है हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित द्वाराहाट के उत्तर में कौसानी पूरव में अल्मोड़ा दक्षिण में रानीखेत और पश्चिम में चौखुटियाए इस विकास खण्ड का क्षेत्रफल है 208वर्ग किमी० जो सङ्घन वनों से आच्छादित है। इन वनों में बॉजए बुराशए उतीसए कॉफलए चीड़ और देवदार प्रमुख वृक्ष हैं। इस विकास खण्ड के अर्न्तगत प्रमुख नदी गंगास है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी छोटी नदियों इसमें मिलती हैं। नदियों के किनारे की उपजाऊ भूमि को सेरा कहा जाता है। कृषि योग्य भूमि कम है। यहाँ पर सब्जी व रवि तथा खरीफ की फसलों का उत्पादन होता है। सिंचाई के लिए नहरों का निमार्ण किया गया है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ के लोगों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

संदर्भरू

;1द्ध उत्तराखंड ज्ञानकोष जनपद दर्पण रू भगवान सिंह धामी

;2द्ध उत्तराखंड सुमन रू सुप्रिया बडोनी

;3द्ध उत्तराखंड का नवीन इतिहास रू डॉ यशवंत सिंह कठोच

;4द्ध विकीपीडिया।